2. दवा इंजैक्शन कोन्याँ लाग्गै मेरे नजर का नाग लड़ा सै ।

कोये पिछले जन्म का संस्कार मेरी करणी का फल झड़ा सै ।

हल्या टहल्या ना जाता काया का बुत होया पड़ा सै।

यूँ जिंघे नै गया मेरी जान नैं उस खूँट ले गया ।।

जीऊँ ना मरूँ रहूँ तड़पती प्रेम की कसकै गाँठ घरूड़ी ।

मेरे गात म्हं कुछ भी कोन्याँ जिसी पड़ी हो खाली तूड़ी ।

उसनै अपने प्रेमपाश म्हं मैं सूं कसूती जूड़ी ।

मेरी शर्म की सिरसम सी वो कूट ले गया ।।

3. पढ़ते-पढ़ते ध्यान गया स्कूल जनाने म्हं ।

मनैं झाँकी म्हं कै कती मारगी एक निशाने म्हं ।।.

... टेक

मनैं झाँकी के म्हं रूप दीखग्या एक पढ़ण आळी का ।

No. of Printed Pages : 06 Roll No. .....

51244

M.A. Hindi EXAMINATION, 2026

(Second Semester)

(Re-appear Only)

(2023-24 Onwards)

हरियाणवी लोक साहित्य लोक नाट्य सांग

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks :* 80

खण्ड क

नोट : प्रत्येक इकाई से कम से कम **एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **3×16=48**

इकाई I

1. हरियाणा प्रदेश की मंचीय कलाओं की लोकरंजनकारी पृष्ठभूमि को स्पष्ट कीजिए ।

2. सांग की परिभाषा देते हुए, उसके विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालिए ।

3. हरियाणवी लोकनाट्य की कथ्यगत विशेषताओं पर चर्चा कीजिए ।

इकाई II

4. बाजे भगत का जीवन परिचय देते हुए, उसके दार्शनिक विचारों पर प्रकाश डालिए ।

5. पं. लख्मीचन्द रचित सांग 'शाही लकड़हारा' में चित्रित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

6. पं. लख्मीचन्द के काव्य कौशल पर प्रकाश डालिए ।

खण्ड ख

नोट : किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर **250** शब्दों में दीजिए । **4×4=16**

1. हरियाणवी लोकनाट्य के विकास पर प्रकाश डालिए ।

2. हरियाणवी लोक गाथा लोक संस्कृति का चित्रण है, स्पष्ट कीजिए ।

3. हरियाणवी लोकनाट्य की शिल्पगत विशेषताएँ बताइए ।

4. लोक नाट्य परम्परा में बाजे भगत का स्थान निर्धारित कीजिए ।

5. 'गोपीचन्द' सांग की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

6. पं. लख्मीचन्द के सांगों में 'हरियाणा की परम्परा एवं संस्कृति' का समृद्ध चित्रण है, स्पष्ट कीजिए ।

खण्ड ग

नोट : किन्हीं **दो** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **2×8=16**

1. भीतर बड़ग्या बूढ़ा थैली माया की ठा ली ।

जागर होगी घर वालों की न्यूं हिरदा हाल्या ।।

यो आया चोर, यो गया चोर न्यूँ शोर हो गया ।

गये जाग मोहल्लेदार ब्यौंत कुछ और हो गया ।

पहरेदार सिपाहियों का भी जोर हो गया ।

ली थैली खोस पिता पै चमन खुद चोर हो गया।

चम-चम-चमकै रूप दीप जणुं चसै दीवाळी का ।

काट्या जीवै ना माणस इस नागण काळी का ।

फिरै चौगरदे त्यौर फैर जणुं रफल दुनाळी का ।

या चोट झेल ले हिम्मत सै इसी किस मरदाने म्हं ।

आच्छे से की जान काढ़ ले, निगाह मिलाने म्हं ।।

4. हे बहू राणी, तू तलै बहल तै आज्या ।
तेरै मुँह दिखलाई घालैंगी, चंदा-सी स्यान दिखा ज्या
।।..... टेक

काम छोड़ कै आई सूं, मुँह देखण खातिर दौड़ झपट
कै ।

नई बहू के चाह की मारी पड़गी होती पैर रपट कै ।

पाँच-सात दिन डट कै याड़े, सबका जी-सा ला
ज्या ।।

अगड़ पड़ोसण कट्ठी हो कै, आर्टी सैं सब याणी
स्याणी ।

कुणबे गैल्या सलूख राखिए, ठीक नहीं सै खींचा
ताणी ।

देवर दुराणी जेठ-जिठाणी, सास ससुर मन भाज्या ।।

❖❖❖❖❖❖❖